

धर्म या मज़हब

भाग - १

अकाल पुरुष परमेश्वर —

प्रेम-पुरुष है ।
अति-प्रीतम है ।
प्रेम स्वरूप है ।

इसलिए उसका 'हुकुम', 'कवाउ', 'बाणी' भी असीम, सम्पूर्ण तथा 'प्रेम-मयी' है ।

साचा साहिबु साचु नाइ भारिआ भाउ अपारु ॥ (पृ २)
हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ अणीआले अणीआ राम राजे ॥ (पृ ४४९)
प्रेम पदारथु नामु है भाई माइआ मोह बिनासु ॥ (पृ ६४०)

इस प्रकार अकाल पुरुष 'प्रेम-स्वरूप' होकर, समस्त सृष्टि में 'शब्द' द्वारा रवि-रहिआ-परिपूर्ण है —

रागि रता मेरा साहिबु रवि रहिआ भरपूरि ॥ (पृ २३)
आपे हुकमि वरतदा पिआरा आपे ही फुरमाणु ॥ (पृ. ६०६)
जत्र तत्र दिसा विसा होइ फैलिओ अनुराग ॥ (जापु पा १०)

अकाल पुरुष की ज्योति-स्वरूप, 'प्रेम किरण', सृष्टि के समस्त जीवों में परिपूर्ण है । दूसरे शब्दों में सृष्टि की प्रत्येक वस्तु तथा जीवों में भी, दैवीय आत्मिक प्रीत-प्रेम-प्यार का प्रतिबिम्ब झलकता है ।

इसी ईश्वरीय —

प्रेम आकर्षण
प्रेम आकांक्षा
प्रीत-डोरी
नेहु-नवेला (नित्य नवीन प्रेम)

द्वारा प्रत्येक 'जीव' तथा सृष्टि का कण-कण, अपने केन्द्र अकाल पुरुष की ओर, दिव्य प्रीत-त्तार से, निरन्तर खिंचता जा रहा है।

मू लालन सिउ प्रीति बनी ॥ रहाउ॥

तोरी न तूटै छोरी न छूटै ऐसी माधो खिंच तनी ॥ (पृ ८२७)

इसी दिव्य 'प्रीत-डोरी' द्वारा, प्रत्येक वस्तु या जीव, एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं।

Like attracts like.

धातु मिलै फुनि धातु कउ लिव लिवै कउ धावै ॥ (पृ ७२५)

इसी —

प्रीत-डोरी

प्रीत-त्तार

दिव्य-आकर्षण

के 'प्रवाह' या 'प्रवृत्ति' के सिद्धान्त को ही —

दैवीय धर्म (Religion)

कल्याण (Evolution)

'हुकुम' (Divine will)

कहा गया है।

यह दैवीय 'धर्म' समस्त सृष्टि के कण-कण में 'साथ लिखा' हुआ है, तथा गुप्त रूप में आदि काल से युग-युगों में, इकसार, गुप्त रूप से, 'हुकुम' के प्रवाह में प्रकाशमान तथा प्रवृत्त है।

यह हुकुम-रूपी दैवीय 'धर्म' पुस्तकों में नहीं लिखा जा सकता, क्योंकि यह 'दैवीय धर्म' —

सर्वज्ञ है

अक्षर रहित है

बोली रहित है

देश रहित है

पक्षपात रहित है

असीम है
 सच है
 अटल है
 त्रुटि रहित है
 सदैव है
 गुप्त है
 साथ लिखा है
 द्वैत भाव से रहित है
 तअस्सुख रहित है
 दिमागी 'पकड़' से दूर है ।

वनस्पति के बीजों के अन्दर प्रविष्ट 'हुकुम' अनुसार ही, प्रत्येक बीज में से भिन्न-भिन्न पौधे — उगते, बढ़ते, प्रफुल्लित होते तथा फल देते हैं। परन्तु इनकी टहनियों, पत्तियों, फूलों तथा आयु में भिन्नता होती है।

वनस्पति तथा अन्य योनियों के जीवों में, बुद्धि तथा चिन्तन शक्ति सीमित होती है। जिस कारण वे अपनी चतुराईयाँ या उक्तियाँ प्रयोग नहीं कर सकते तथा 'साथ लिखे' हुकुम रूपी 'धर्म' के गुप्त प्रवाह में दरवल नहीं दे सकते। इसलिए वे अपने-अपने 'साथ लिखे' दिव्य 'धर्म' को सहज ही तथा अनजाने ही मानते व पालन करते रहते हैं।

इस प्रकार वे 'हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि' की पाक्ति का अनजाने तथा सहज-स्वभाव ही पालन कर रहे हैं, जिस कारण उनकी आत्मिक उन्नति (natural evolution) सहज ही हो रही है। यही उनका अन्तर्मुखी 'साथ लिखा' हुआ 'निजी धर्म' है।

उनके कल्याण के लिए, किसी बाहरी धर्म या मज़हब की आवश्यकता नहीं, तथा न ही किसी 'प्रचार' की।

ये योनियाँ 'हुकुम रजाई चलणा' के इलाही गुप्त, त्रुटिरहित, अपने-अपने 'धर्म' का अनजाने, भोले भाव तथा ईमानदारी से, पालन कर रही हैं।

यह योनियाँ — न हिन्दू, न मुसलमान, न ईसाई, न मुसाई हैं। यह केवल अपने कर्त्ता द्वारा प्रदान किये हुए 'चिन्हों' में, अपने-अपने अन्तर्गत साथ लिखे 'निजी धर्म' का पालन कर रही हैं।

जब बच्चे का, माँ की कोख में गर्भ स्थापन होता है, तो साथ लिखे ईश्वरीय 'हुकुम' अनुसार, उस बच्चे का पेट में अनेखे तथा आश्चर्यजनक ढांग से 'पालन' होता है। बच्चे की इस गुप्त करामती 'परवशि' के विषय में माँ को कोई ज्ञान नहीं होता तथा न ही उसकी कोई सयानप काम करती है तथा बच्चे को भी अपनी परवशि के विषय में कोई ज्ञान नहीं होता ।

बच्चे का पेट की तीव्र जठर-अग्नि में गर्भ में आना, बढ़ना, प्रफुल्लित होना, बचाव तथा परवशि होनी ही, अत्यंत आश्चर्यचकित करने वाला **विस्मादमयी दिव्य कौतुक** है, जिसमें न 'माँ' की तथा न ही बच्चे की कोई चतुराई, दरवल-अदाजी तथा उद्यम काम करता है ।

यह सम्पूर्ण दिव्य 'करामात पूर्ण खेल' वीर्य के एक 'कण' (sperm) के अन्तर्गत 'साथ ही' लिखा था, जो पेट के अन्दर —

चुम-चाप
गुतरूप में
अनजाने
भोले भाव
सहज स्वभाव
स्वतः

किसी 'दिव्य' शक्ति के गुप्त 'प्रवाह' या 'दैवीय हुकुम' का आश्चर्यचकित करने वाला कौतुक है, जिसकी ओर —

ध्यान देने के लिए
विचार करने के लिए
मूल्यांकन के लिए
आश्चर्यचकित होने के लिए
धन्यवाद करने के लिए
विस्माद में आने के लिए

हमारे पास फुरसत ही नहीं तथा न आवश्यकता ही प्रतीत होती है ।

गुरबाणी में इस कौतुक पर **विस्मादित होने तथा शुक्राना** करने के लिए यँ प्रेरणा दी है —

रमईआ के गुन चेति परानी ॥
 कवन मूल ते कवन दिसटानी ॥
 जिनि तूँ साजि सवारि सीगारिआ ॥
गरभ अगनि महि जिनिहि उबारिआ ॥
 बार बिवसथा तुझहि पिआरै दूध ॥
 भरि जोबन भोजन सुख सूध ॥
 बिरधि भइआ ऊपरि साक सैन ॥
 मुखि अपिआउ बैठ कउ दैन ॥
 इहु निरगुनु गुनु कछू न बूझै ॥
 बरवसि लेहु तउ नानक सीझै ॥

(पृ २२६)

जब बच्चे का जन्म होता है, तो माँ अपने बच्चे के पालन-पोषण, खुशहाली, विद्या आदि की योजनाएँ बनाती है तथा शुभ कामनाओं व आशीषों भरा प्यार देती रहती है, तथा अपने बच्चे पर निछावर होती हुई हर प्रकार की कुरबानी देती है।

पेट में बच्चे के 'गर्भ-स्थापन' से लेकर, जन्म उपरांत भी, बच्चे के लिए जो 'माँ-प्यार' उत्पन्न होता है, वह उस 'जीव' के लिए **ईश्वरीय प्रेम का ही प्रतिबिम्ब है।**

इस प्रकार —

माँ-प्यार का अवकृण
 माँ के उदर में गुप्त पालन होना
 अत्यन्त पीड़ में जन्म देना
 वक्ष में दूध भर आना
 प्यार से परवरिश करनी
 शुभ इच्छक होना
 लाड लडाना
 रकेल खिलाना
 बलिहारी जाना
 कुरबान होना

आदि, ये समस्त 'माँ-प्यार' की सूक्ष्म प्रेम भावनाएँ, माँ के हृदय में 'हुकुम-रूपी' ईश्वरीय 'धर्म' का ही —

प्रकाश है

प्रकटाव है

प्रवृत्ति है
प्रतीक है ।

परन्तु माँ इस 'साथ लिखे हुकुम' रूपी 'दैवीय प्रेम' से अज्ञात होती है तथा बच्चे को अपना समझ कर, 'मोह-ममता' में फँसी रहती है ।

दूसरे शब्दों में, इस साथ लिखे 'हुकुम' अनुसार, प्रत्येक जीव की भलाई तथा परवरिश के लिए, पहले से ही समस्त प्रबन्ध हो चुके होते हैं तथा प्रवृत्त हो रहे हैं ।

हमारे शरीर के अनेक अंग हैं, जैसे दिमाग, आँखें, नाक, फेफड़े, दिल, कलेजा, गुर्दे, हड्डियाँ, माँस, नाड़ियाँ, नसे आदि । यह सभी 'अंग' एक-दूसरे पर आश्रित (dependent), सम्बन्धित तथा सहयोग से, दिन-रात, सोते-जागते, अनजाने, भोले भाव, स्वतः, सहज-स्वभाव किसी गुप्त, अवर्चनीय, सम्पूर्ण, असीम, अबोल, अलिखित, ईश्वरीय 'हुकुम' के प्रवाह में चुप-चाप ही काम कर रहे हैं, जिससे हम बेखबर तथा बेपरवाह हैं ।

'फूल' के बीज में साथ लिखे हुकुम' अनुसार पौधा पनपता है ।

उस पौधे के —

ते
टहनिए
पत्ते
कौंधे
फूल

तथा, उस के —

आकार
बनावट
पँडियाँ
स
महक
मिठास
उम्र
ऋतु

आदि, भिन्न-भिन्न प्राकृतिक गुणों के प्रकटाव के लिए, ईश्वरीय 'हुकुम' बीज के

अन्दर, गुप्त रूप में चुप चाप ही प्रवृत्त हो रहा है ।

इस हुकुम के प्रकटाव या 'प्रवाह' के लिए, किसी बाहरी दिमागी चतुराई के 'हस्तक्षेप' या मार्गदर्शन की आवश्यकता नहीं ।

दूसरे शब्दों में, सृष्टि के सभी 'जीव' अपने कर्त्ता, अकालक्षुरुष के अटल, त्रुटि रहित, सर्वज्ञ, असीम 'हुकुम' के मार्गदर्शन तथा 'प्रवाह' में, उत्पन्न होते, प्रफुल्लित होते तथा 'विलीन' होते हैं । इस प्रकार वे अपने अन्दर 'साथ लिखे' हुकुम को अपने जीवन में, चुप चाप ही मानते तथा अनुसरण करते हैं ।

उपरोक्त उदाहरणों द्वारा स्पष्ट होता है, कि इस 'साथ लिखे' हुकुम को मानना तथा पालन करना ही, उनका 'साथ लिखा' 'निजी धर्म' 'मज़हब' या 'परमार्थ' है, जिसे समझने, सीखने, धारण करने की आवश्यकता नहीं तथा न यह धर्म बाहर से किसी प्रकार उनको सिखाया, समझाया तथा 'थोपा' जा सकता है ।

इस प्रकार, यह 'साथ लिखा' गुप्त 'धर्म', प्रत्येक जीव के लिए —

'जीवन दिशा' है
'निजी धर्म' है
'सम्पूर्ण ईश्वरीय नियम' है
'लोक सुखी' है
'परलोक सुहेला' है
'अन्तर आत्मिक' बीज है
'अन्दर से ही उत्पन्न होता है
ओत प्रोत समाया है
बाहरी धर्मों से आज्ञा है
कर्म-काण्डों से मुक्त है
बुद्धि की पकड़ से दूर है
बख्शिशा है
गुरु प्रसादि है
अबूझ है
असीम है
त्रुटि रहित है ।

चौरासी लारव योनियाँ अपने अन्दर 'साथ लिखे' ईश्वरीय 'धर्म' के 'प्रवाह' के वेग में सहज ही बहते हुए, अनजाने ही अटूट सिमरन कर रही हैं तथा अपने-अपने

निजी धर्म का पालन कर रही हैं । इस प्रकार उनका 'सिमरन' — 'जीवन-रूप' हो जाता है ।

सिमरै धरती अरु आकासा ॥ सिमरहि चढ सूरज गुणतासा ॥
पउण पाणी बैस अतर सिमरहि सिमरै सगल उपारजना ॥

(पृ १०७८)

हरि सिमरनि धारी सभ धरना ॥

(पृ २६३)

प्रतिपालै जीअन बहु भाति ॥

जो जो रचिओ सु तिसहि धिआति ॥

(पृ २९२)

यह 'जीवन-क्रिया' किसी अकथनीय तथा गुप्त 'चुप-प्रीत' की सूक्ष्म प्रीत-डोरी की 'चाल' है, जो दिव्य 'स्रोत' की ओर जीव को सदैव 'आकर्षित' कर रही है ।

यह अन्तर-आत्मिक 'प्रीत-डोरी' का आकर्षण या जीवन-रौंदा की सहज-चाल ही, प्रत्येक जीव का अपना-अपना 'निजी आत्मिक धर्म' है ।

अल्प बुद्धि के कारण, चौरासी लाख योनियाँ अपने अन्दरूनी 'साथ' लिखे 'ईश्वरीय धर्म' से अनजान हैं । यह अज्ञानता, उनके लिए कल्याणकारी तथा गुप्त कृपा है ।

वे अपने ईश्वरीय 'हुकुम-रूपी' साथ लिखे 'धर्म' का भोले-भाव तथा अनजाने ही पालन कर रही हैं ।

उन्हे अपने 'धर्म' की कमाई का मनुष्यो का भावति 'अहंकार' नहीं होता ।

सहज-स्वभाव ही 'सञ्चुक' में रहते हैं तथा 'प्रभु आज्ञा' मानते हैं, मनुष्य की भावति किन्तु-परन्तु, शिकायत, रोष आदि नहीं करते ।

अपने अन्दरूनी दैवीय धर्म, के पालन द्वारा, उनकी आत्मिक उन्नति सहज ही होती रहती है ।

इस प्रकार उनकी अज्ञानता ही उनके लिए कल्याणकारी होती है ।

मनुष्य की भाँति वे सयानप-चतुराईयाँ दिखा कर, अपने ईश्वरीय धर्म से 'विमुख' नहीं होते ।

इसीलिए वे अपने कर्मों के परिणामों से 'मुक्त' हैं ।

तब तो स्पष्ट है, कि चौरासी लाख योनियाँ अपने-अपने अन्तर्गत 'हुकुम' की 'सहज-चाल' में, चुपचाप तथा अनजाने ही प्रवृत्त होकर, अपने 'साथ लिखे' दैवीय 'धर्म' का पालन कर रही हैं तथा अपने कर्त्ता अकाल-पुरुष की 'आज्ञा' में, अपना जीवन सफल कर रही हैं ।

इस लिए उपरोक्त विचारों से स्पष्ट है कि ईश्वरीय हुकुम-रूपी, साथ अन्तर्गत लिखे, 'धर्म' में —

पक्षपात
 वै-विरोध
 ईर्ष्या-द्वेष
 नफरत
 तअस्सुब
 टकराव
 झगड़े
 लड़कियाँ

की कोई गुंजाइश ही नहीं ।

यही कारण है, कि चौरासी लाख योनियों में, 'मजहबी तअस्सुब' (धर्मान्धता) की आड़ में कोई :—

खिदमत
 शेर-शराबा
 रकून-कराबा
 अत्याचार

नहीं हो सकता ।

इन योनियों में से गुजरता हुआ 'जीव' जब शिरोमणि मनुष्य योनि में आता है, तब अकाल पुरुष, मनुष्य को विशेष बरिखिशे प्रदान करता है :—

1. मनुष्य को ईश्वर ने 'अपने-स्वरूप' में बनाया है ।
 मन तू जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥ (पृ. ४४१)
2. मनुष्य को असीम तीक्ष्ण-बुद्धि प्रदान की है, ताकि वह —
 अपने 'आत्मन' को पहचान सके ।
 अपने 'कर्त्ता' को पहचान सके ।
 अपने हुकुम-रूपी 'धर्म' को पहचान सके ।

अपने 'जीवन' को सही आत्मिक मार्गदर्शन दे सके ।
 आवागमन के 'चक्र' से बच सके ।
 अपने 'कर्त्ता' अकाल पुरुष मेa पुनः 'सम्ना' सके ।
 ईश्वर द्वारा प्रदान बरिखिशोa का उचित प्रयोग कर सके ।

इस तथ्य को गुरबाणी मेa यूँ दर्शाया गया है —

अकलि एह न आरवीए अकलि गवाइए बादि ॥
 अकली साहिबु सेवीए अकली पाईए मानु ॥
 अकली पढि कै बुझीए अकली कीचै दानु ॥
 नानकु आरवै राहु एहु होरि गलाa सैतानु ॥ (पृ १२४५)

3. शेष समस्त योनियोa का 'सिरताज' बनाया है ।
 सगल जोनि महि तू सिरि धरिआ ॥ (पृ ९१३)
 लख चउरासीह जोनि सबाई ॥
 माणस कउ प्रभि दीई वडिआई ॥ (पृ १०७५)

लख चउरासीह जूनि विचि उतमु जूनि सु माणस देही ।

(वा. भा. गु. १५/१३)

4. समस्त सृष्टि की अनगिनत 'बरिखिशोa' प्रदान की हैं ।
 देदे तोटि नाही प्रभ रअगा ॥ (पृ ९९)
 तुधु सभु किछु मैनो सउपिआ जा तेरा बादा ॥.....
 लख चउरासीह मेदनी सभ सेव करअदा ॥ (पृ १०९६)

5. मनुष्य के शारीरिक तथा मानसिक सुख के लिए अनगिनत नाना प्रकार
 के मायिकी साधन प्रदान किये हैं ।
 अगनत साहु अपनी दे रासि ॥
 खात पीत बरतै अनद उलासि ॥ (पृ २६८)
 सो किउ बिसरै जिनि सभु किछु दीआ ॥
 सो किउ बिसरै जि जीवन जीआ ॥ (पृ २९०)

6. मनुष्य के कल्याण के लिए आवश्यकता अनुसार अनेक 'धर्म' प्रचलित किये
 हैं । इन धर्मोक्ते प्रचार के लिए तथा सही आत्मिक दिशाज्ञान देने के लिए,

अनगिनत उपदेश तथा दैवीय वाणियोa की रचना की गयी है। भूले-भटके जीवोa के सही 'मार्ग-दर्शन' के लिए अनेक गुरू, अवतार, पीर, पैगम्बर, साधू, सत, भक्त दुनिया मेa भेजे गए।

हरि जुगह जुगो जुग जुगह जुगो सद पीड़ी गुरू चल aदी ॥

जुगि जुगि पीड़ी चलै सतिगुर की

जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ ॥

(पृ ७९)

साध पठाए आपि हरि हम तुम ते नाही दूरि ॥

(पृ ९२९)

जुगि जुगि सत भले प्रभ तेरे ॥

हरि गुण गावहि रसन रसेरे ॥

(पृ १०२५)

आश्चर्य की बात यह है कि जहाँ सीमित बुद्धि वाली चौरासी लारव योनियाँ तो ईश्वरीय बरिखिश्रोa से अनजान होते हुए भी, उन उपहारोa का पूरा-पूरा लाभ उठा रही हैं तथा सहज-स्वभाव अपने कल्याण का उपाय कर रही हैं।

वहाँ अत्यंत तीक्ष्ण बुद्धि वाला 'मनुष्य', समस्त योनियोa का शिरोमणि होते हुए भी, अपने दिव्य उद्देश्य से अनजान, बेपरवाह, विमुख होकर, रसातल की ओर बहता जा रहा है।

इस विषय को गुरबाणी यूँ दर्शाती है —

पड़िआ मूरखु आरवीए जिसु लबु लोभु अह aकारा ॥

(पृ १४०)

दाति पिआरी विसरिआ दातारा ॥

(पृ ६७६)

देवनहार दातार प्रभ निमख न मनहि बसाइ ॥

लालच झूठ बिकार मोह इआ स aपै मन माहि ॥

(पृ २६१)

हमारा अहम्-ग्रस्त मन, परमेश्वर द्वारा प्रदान की गयी तीक्ष्ण बुद्धि तथा निर्णय शक्ति का गलत प्रयोग करता है तथा अनेक उक्तियाँ-युक्तियाँ, चतुराईयाँ दिरवा-दिरवा कर, अपने साथ लिखे 'हुकुम' या 'धर्म' के प्रवाह से 'बेसुर' होकर, अपनी ही 'रजा' मेa विचरण करता है तथा दैवीय 'प्रीत-तार' से टूट जाता है।

'भ्रम-भ्रुलाव' मेa हमारी 'निर्णय-शक्ति' म aद या मलिन हो जाती है, जिस कारण, हम अच्छे-बुरे का निर्णय या परख करने मेa असमर्थ हो जाते हैं तथा अनजाने ही अनेक प्रकार के पाप अर्जित करते रहते हैं।

इस प्रकार हम अपने अहम् को चारा डाल कर उसे सुदृढ़ करते हैं तथा साथ ही साथ हमारे भ्रम-भुलाव का पर्दा भी मोटा होता जाता है। जिसके परिणाम स्वरूप हम हुकुम-रूपी 'ईश्वरीय धर्म' से और भी दूर चले जाते हैं।

अफसोस की बात तो यह है कि —

इतनी तीक्ष्ण बुद्धि
 अनेक धर्मों
 अनेक धर्मग्रन्थों
 अनगिनत धार्मिक मन्दिरों
 अत्यन्त धर्मप्रचार
 अत्यन्त ज्ञान-ध्यान
 अत्यन्त पाठ-पूजा
 अनगिनत जप-तप तथा कर्म क्रिया
 अनगिनत हठ योग साधनाएँ
 अनगिनत धार्मिक मार्गदर्शकों

के होने के बावजूद, मनुष्य को अपने —

आत्मन
 कर्त्ता
 ईश्वरीय धर्म
 'साथ लिखे' 'धर्म'
 सही जीवन लक्ष्य
 कल्याण

के विषय में कोई 'ज्ञान' नहीं हो सका तथा मनुष्य अपने दैवीय अस्तित्व को भुलाकर, रसातल की ओर बहता जा रहा है तथा श्रेष्ठ समस्त अज्ञानी योनियों से भी तुच्छ, मलिन तथा दुखदायी जीवन व्यतीत कर रहा है।

मनुष्य की इस दयनीय तथा दुःखदायी अधोगति के कारणों की खोज-विचार करने की आवश्यकता है ।

अकाल पुरुष ने मनुष्य को अपने स्वरूप में रच कर, अपनी समस्त शक्तियाँ प्रदान की हैं ।

जहाँ अकाल पुरुष ने मनुष्य को अनगिनत शक्तियाँ प्रदान की हैं, वहाँ अहम् का 'भ्रम-भुलाव' भी डाल दिया है, जो अति प्रबल, दीर्घ तथा सूक्ष्म है ।

हउमै एहो हुकमु है पइए किरति फिराहि ॥ (पृ ४६६)

जिनि रचि रचिआ पुरखि बिधातै नाले हउमै पाई ॥ (पृ ९९९)

इस अहम् के भ्रम-भुलाव के कारण हम —

अपने 'आत्मन को नहीं बूझ सकते ।

अकाल पुरुष की हस्ती पर निश्चय नहीं होता ।

ईश्वरीय हुकूम को नहीं बूझ सकते ।

साथ लिखे धर्म से अनजान रहते हैं ।

ईश्वरीय बरिष्ठाशों का पूर्ण आनन्द नहीं ले सकते ।

अपनी जीवन-दिशा का पता नहीं लगता ।

आत्मिक विरासत से वञ्चित रहते हैं ।

हमारे कर्म 'अहम्' के अधीन होते हैं ।

इन 'अहम्' ग्रस्त कर्मों का परिणाम भोगते हैं ।

जन्म-मरण के चक्र में बार-बार फँसते हैं ।

भरमे आवै भरमे जाइ ॥ इहु जगु जनमिआ दूजै भाइ ॥

मनमुखि न चेतै आवै जाइ ॥ (पृ १६१)

भरमे भूला फिरै सत्सार ॥

मरि जनमै जमु करे खुआरु ॥ (पृ ५६०)

साधो इहु जगु भरम भुलाना ॥

राम नाम का सिमरनु छोडिआ माइआ हाथि बिकाना ॥ (पृ ६८४)

बिनु नावै भमि भमि भमि खपिआ ॥ (पृ ११४०)

अहम् के 'भ्रम-भुलाव' के कुछ उदाहरण प्रस्तुत है :—

1. थियेटर (theatre) में कई कलाकार होते हैं, जो कई प्रकार की भूमिका

(role) अदा करते हैं। रागमाच पर उनकी प्रत्येक हरकत, अदा, बोलचाल आदि मालिक की किसी पूर्व निश्चित योजना अनुसार नियम-बद्ध होती है। स्टेज पर कोई राजा, कोई रानी, कोई नौकर, कोई दाता, कोई भिखारी आदि, अनेक वेष धारण करके, अपना-अपना 'पार्ट' अदा करते हैं। प्रत्येक को निश्चय होता है कि वास्तविकता में वे राजा-रानी आदि नहीं हैं, अपितु क्षण भर के स्टेज पर अपना नियत 'पार्ट' अदा करने ही आये हैं तथा वास्तव में वह अपने मालिक के नौकर ही हैं। उन्हें यह अहसास होता है कि वह 'स्वतन्त्र' नहीं हैं, अपनी मनमर्जी नहीं कर सकते। परन्तु यदि कोई 'पात्र' अपने मालिक को 'भूल' कर या बागी होकर, स्टेज पर अपनी मन-मर्जी करता है, तो समस्त खेल में विघ्न पड़ जाता है, जिस की उसे सजा मिलती है।

ठीक इसी प्रकार इस सृष्टि के मालिक 'अकाल पुरुष' ने, अपने असीम 'हुकुम' द्वारा, यह सांसारिक 'विराट नाटक' रचा हुआ है, जिस में हम समस्त जीव, अपना-अपना 'पार्ट' अदा करने आये हैं।

ईमानदारी से, इस 'हुकुम-रूपी' प्रभु आज्ञा के प्रवाह में चलना ही, हमारे साथ लिखे दिव्य 'धर्म का पालन है।

जब तक हम अकाल-पुरुष की दैवीय योजना में 'हुकुम' की रज़ा में अपना-अपना 'पार्ट' अदा करते हैं, तब तक ईश्वरीय 'खेल-अखाड़ा' निर्विघ्न चलता है तथा 'कलाकार' अथवा 'जीव को सम्मान मिलता है।

परन्तु, जब जीव अपने 'मालिक' अकाल पुरुष को भूल जाते हैं या विमुख हो जाते हैं, तब वे 'मोह-माया' की अज्ञानता में 'अहम्' के अधीन स्वयं ही 'मालिक' तथा कर्त्ता-धर्त्ता बन बैठते हैं और मन-मर्जी करते हैं।

इसी कारण जीव ईश्वरीय बख्शीशों से वंचित रहते हैं तथा कर्म बद्ध होकर, मायिकी नियम अनुसार दुख-सुख भोगते हैं।

जो मैं कीआ सो मैं पाइआ दोसु न दीजै अवर जना ॥ (पृ ४३३)

आपणै भाणै जो चलै भाई विछुड़ि चोटा खवै ॥ (पृ ६०२)

आपन करम आपे ही बंध ॥

आवनु जावनु माइआ धंध ॥ (पृ ८८८)

2. बिजली का करंट 'पावर हाउस' में उत्पन्न होता है। यह बिजली प्रत्येक 'बल्ब' में प्रकाश देती है। बल्ब के अंदर 'फिलामेंट' की सूक्ष्म तार होती है, जिसके द्वारा बिजली का प्रकाश होता है। उसके चारों ओर अनेक रत्न तथा आकार वाले शीशे का आवरण चढ़ा होता है। जब इसमें करंट आता है, तो यह 'जग' उठता है या जीवित हो जाता है, नहीं तो यह बुझ जाता है अथवा 'मुर्दा' हो जाता है।

बल्ब को जीवन, 'करंट' से मिलता है तथा करंट 'पावर हाउस' से आता है। बल्ब का अपने आप में कोई अस्तित्व नहीं है, इसका अस्तित्व 'करंट के द्वारा' बनता है।

इसी प्रकार, जीवन-प्रकाश का 'स्रोत' अथवा पावर हाउस, 'नाम' या 'शब्द' ही है।

यदि बल्ब अपने 'जीवन प्रकाश' के स्रोत को 'भुला' कर या 'झूठला' कर, अपना पृथक 'अस्तित्व समझे, तो वह 'झूठा' है, 'पावरण्टी' है तथा उसके अहम् का अस्तित्व कूड़ है। वास्तविक हस्ती तो 'अकाल पुरुष' है तथा उस में से उत्पन्न नाम का प्रकाश ही जीव-रूपी 'बल्ब' का साथ लिखा, हुकुम-रूपी 'ईश्वरीय धर्म' है।

ठीक इसी प्रकार अकाल पुरुष की एक मात्र 'हस्ती' है, जिस में से जीवन रूपी 'ज्योति', प्रत्येक जीव की अन्तर आत्मा में प्रकाशमान तथा प्रकृत हो रही है। परन्तु माया रूपी भ्रम-भुलाव की अज्ञानता में, जीव को यह भ्रम है, कि वह अपने आप में कोई पृथक हस्ती है तथा स्वयं ही सम्पूर्ण कर्त्ता-धर्त्ता है, जिस कारण उसके जीवन के प्रत्येक पक्ष में मै-मेरी का प्रकटाव तथा व्यवहार हो रहा है।

पहले बताया जा चुका है कि दैवीय 'हुकुम' ही नाम की जीवन-रौं ईश्वरीय 'धर्म' की गुप्त 'सहज-चाल' है।

ईश्वरीय 'हुकुम', 'नाम' या साथ लिखा 'निजी धर्म', कण-कण में परिपूर्ण है।

जिस प्रकार बिजली का करंट तो एक ही होता है, परन्तु उस के प्रकटाव के बाहरी साधन, बल्ब, ट्यूब आदि अनेक यन्त्र होते हैं, जिनके द्वारा प्रवाहित 'करंट', उनकी रत्नगत अनुसार — लाल, पीला, नीला प्रकाश देता है।

इसी प्रकार पानी तो एक ही होता है, परन्तु इसमें जो वस्तु मिलायी जाती है, उसी अनुसार पानी का रत्न तथा स्वाद बनता है।

ठीक इसी प्रकार 'जीवोa' मेa ईश्वरीय 'जीवन-रौं' तो एक ही प्रवृत्त है, परन्तु मन, बुद्धि तथा अन्तःकरण की रागत अनुसार, इस जीवन रौं का बाहर-मुख प्रकटाव भिन्न-भिन्न होता है ।

इस का तात्पर्य यह है कि 'जीवन-रौं' के प्रकाश तथा प्रकटाव के दो पक्ष हैं —

1. अन्तर-मुख गुप्त 'सहज चाल' — जो पूर्णतया निर्मल, 'नाम' 'हुकुम' तथा साथ लिखा निजी धर्म है ।

2. बाहर मुख प्रकटाव —

जिस पर —

अहम् ग्रस्त मन
अहम् ग्रस्त बुद्धि
अन्तःकरण

का 'अक्स' या राग चढ़ा हुआ होता है ।

इन दोनोa परिस्थितियोa मेa, ईश्वरीय 'जीवन-रौं' के सयुक्त प्रवाह को ही, भिन्न-भिन्न जीवोa का 'साथ लिखा' हुआ 'दैवीय धर्म' कहा गया है ।

(क्रमश.....)

